तृतीय अध्याय
संचार माध्यम

व्यवहार में, संचार के साथ 'जन' (Mass) शब्द का प्रयोग किया जाता है। जनसंचार अथवा mass cummunication का अभिप्राय, वहुल अथवा अधिक मात्रा अथवा वड़े क्षेत्र में विखरे लोगों तक, संचार-माध्यम द्वारा, संदेश अथवा सूचना को पहुँचाना है।

संचार माध्यमों का ही चमत्कार है कि कोई व्यक्ति विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में वैठे व्यक्ति से कुछ ही क्षणों में सम्पर्क स्थापित कर सकता है। संचार माध्यम अँग्रेजी के 'मीडिया' शब्द से वना है, जिसका अभिप्राय होता है—दो विन्दुओं को जोड़नेवाला। संचार माध्यम भी सम्प्रेषक और श्रोता को परस्पर जोड़ते हैं।

संचार माध्यमों का विकास समय के विकास के साथ जुड़ा है। आज हम संवार की जिस आधारशिला पर खड़े हैं, वह भी स्थिर और स्थायी नहीं है। विकास प्रक्रिया संचार माध्यमों के स्वरूप को भी बदलती रहती है। आज का संचार माध्यम हजारों वर्षों के विकास का परिणाम है, किन्तु वह अन्तिम नहीं है।

संचार-माध्यमों को निम्नांकित रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. **परम्परागत माध्यम :** कठपुतली, लोकनृत्य, लोकनाट्य और लोकगीत।
2. **आधुनिक माध्यम :**

1. मुद्रण माध्यम :
समाचार पत्र/पत्रिकाएँ
2. इलेक्ट्रानिक माध्यम :
1. श्रव्य माध्यम :
आकाशवाणी
2. श्रव्य एवं दृश्य माध्यम :
फिल्म एवं दूरदर्शन

3. नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम
उपग्रह एवं कम्प्यूटर
इन्टरनेट

कहना गलत नहीं होगा कि पृथ्वी पर चैतन्य-युक्त मनुष्य के जन्म के साथ ही संचार माध्यम प्रारम्भ हो गया था। प्राचीन भारत में संचार माध्यम यान्त्रिक न होकर व्यक्तिपरक था। मौखिक संचार अन्य संचार-प्रक्रिया की अपेक्षा अधिक प्रभावी था। संचार माध्यम को अन्तरवैयक्तिक माध्यम कहा जाता है। इसमें विचार-विनिमय एक-दूसरे व्यक्ति से सीधे होता है। प्राचीन भारत में संत, साधु, चरण, भाट, साहित्य सभा आदि प्रमुख थे, जो संचार माध्यम का कार्य करते थे। वस्तुतः प्राचीनकाल में संचार-प्रक्रिया अपने विकास के शैशव काल में थी।

परम्परागत संचार माध्यम

परम्परागत संचार माध्यम ग्रामीण लोगों को परम्परागत उत्तराधिकार में प्राप्त संचार माध्यम है। ये परम्परागत संचार माध्यम, सामाजिक सद्‌गुणों, संवेदनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। इन परम्परागत संचार माध्यमों का अस्तित्व उनकी अपनी गतिशीलता और निरन्तर व्यवहार से है, क्योंकि उनका प्राचीन सांस्कृतिक महत्त्व है। इस माध्यम में समय, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन भी हुआ है।

परम्परागत संचार माध्यम के अन्तर्गत प्राचीन कला, संगीत, नृत्य, नाटक एवं कठपुतली, हरिकथा, कहानी, लोकगीत, उत्सव-त्यौहार, ग्रामीण मेला एवं सभा, सामाजिक संस्थाएँ, ग्रामीण शिल्प एवं ग्रामीण मुखिया आते हैं।

प्राचीनकाल में जनसंचार का माध्यम संगीत और नृत्य हुआ करते थे। सामवेद को संगीत का आदि स्त्रोत माना जाता है। नाना प्रकार के धार्मिक और सामाजिक अवसरों पर नृत्य की प्रथा प्रचलित थी।

हम प्राचीन भारतीय परम्पराओं और पूजा विधियों को देखें, तो उसका भी प्रयोजन संचार अथवा सम्प्रेषण ही था। नारद महर्षि, देव और मनुष्य योनि के मध्य, संचार के अद्‌भुत माध्यम थे। 'गीता' अन्तरव्यक्ति संचार का श्रेष्ठतम उदाहरण है।

रामलीला, कृष्णलीला नाटक इत्यादि परम्परागत संचार के तरीके हैं। मूर्ति के माध्यम से संचार अथवा सन्देश को स्थाई रूप दिया जाता था। धार्मिक मूर्तियों के इर्द-गिर्द ही मानव समुदाय उमड़ता था तथा इस प्रकार मूर्तियाँ भी परम्परागत संचार की अंग थीं। हरिकथा, कीर्तन, भागवत् कथा, प्रवचन इत्यादि तब से आज तक भारतीय समाज में प्रचलन में है।

तीर्थयात्री, यात्रा के दौरान जहाँ पर लौकिक पुण्य प्राप्त करते थे, वहीं वे देश के अन्य भागों की संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, परम्परा इत्यादि से अवगत होते थे। इस प्रकार तीर्थयात्री एक प्रकार से संचार माध्यम का कार्य करते थे। मेला और पर्व भी संचार के साधन थे।

संचार की प्रारम्भिक अवस्थाओं में सूचनाओं को आदान-प्रदान के रूप में किया जाता था। कागज से पूर्व, लिपि के विकास के साथ मानव, पत्तों और वृक्षों की छालों तथा पत्थरों पर अपनी सूचनाओं और सन्देशों को व्यक्त करता था। जैन तथा बौद्ध धर्मों के प्रचार-प्रसार के लिए पाषाण सन्देशों को साधन के रूप में अपनाया गया। महान सम्राट अशोक ने शिलालेखों, स्तम्भलेखों इत्यादि के माध्यम से सरकारी आदेशों को पूरे देश में प्रचारित किया था।

लोककथा, लोककथा, लोकगीत, लोकसाहित्य, लोकनाट्य, स्वांग और कठपुतली का स्थान परम्परागत संचार माध्यमों में महत्त्वपूर्ण है।

लोककला

प्राचीन भारतीय संचार में कला का अनोखा स्थान रहा। लोककलाओं का उद्भव और विकास जनपद अकृत्रिम ग्रामीण जनता के बीच हुआ। मूर्तिकला, चित्रकला इत्यादि के माध्यम से भी सूचनाओं, सन्देशों अथवा विचारों या भावनाओं को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक तथा एक समाज से दूसरे समाज तक प्रेषित करने का कार्य किया जाता था। लौकिक ज्ञान को गलाकर साँचों में ढालना ही लोककला है। चौक, वेदी और दीवारों पर चित्र बनाना—ये सभी लोककलाएँ हमारी भारतीय संस्कृति के ही प्रतीक हैं। सींग, नारियल, शंख, कौड़ी, चर्म, शीशे से सम्बद्ध लोककलाएँ आज करोड़ों भारतीयों के रोजगार के साधन हैं।

कठपुतली

धागों से थिरकती मोम की कठपुतलियाँ, लोककथाओं को नृत्य और तमाशे के द्वारा प्रस्तुत करती हैं। कठपुतली के खेल, गाँव-शहर, धर्मस्थलों इत्यादि पर समान रूप से प्रदर्शित होते आ रहे हैं। कठपुतलियों के प्रदर्शन के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिकता, स्वास्थ्य, मानसिक तुष्टि, साक्षरता उद्योग आदि से सम्बन्धित विषयों को प्रभावशाली ढंग से जनता को समझाया जा सकता है। मनोरंजन के साथ मद्यनिषेध, परिवार-नियोजन, दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों के प्रति जन-जन को चैतन्य करने में इनकी भूमिका उल्लेखनीय है। कठपुतली को बनाने में और उसके प्रयोग करने में आसानी होती है और व्यय भी कम

होता है। थोड़े-से कर्मचारियों से काम चल जाता है। इसके प्रदर्शन में किसी विशेष प्रशिक्षण या डिग्री प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती। छोटे-बड़े, शिक्षित-अशिक्षित सभी प्रकार के लोग इसमें रुचि लेते हैं।

ये पुतलियाँ चार तरह की बनाई जाती हैं...

1. धागेवाली कठपुतली : धागेवाली कठपुतली की भुजाओं, पैरों और घुटनों में जोड़ होते हैं, जिससे कठपुतली लचकदार होती है। इस प्रकार की कठपुतली में हस्तकौशल और अभ्यास की जरूरत होती है।
2. छड़वाली कठपुतली : इस प्रकार की कठपुतलियाँ पश्चिम बंगाल में प्रचलित हैं। जापान और यूरोप के देशों में भी इनका प्रचलन है। आकार में बड़ी कठपुतली छड़ों की सहायता से संचालित होती हैं।
3. दस्तानेवाली कठपुतली : व्यक्ति के हाथों से गतिशील कठपुतलियाँ जीवंतता से परिपूर्ण होती हैं। एक ही व्यक्ति दो कठपुतलियों को एक साथ नचा सकता है—एक उसके दायें हाथ पर और दूसरी बायें हाथ पर। यहाँ संचालक अपनी आवाज बदलकर दो कठपुतलियों में वार्तालाप करवाता है।
4. छाया कठपुतली : यह कठपुतली चमड़े, प्लास्टिक या टिन से निर्मित होती है और इसकी छाया एक परदे पर पड़ती है। इस कठपुतली के अभिनय का नियन्त्रण छड़ों द्वारा होता है। आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, और उड़ीसा में इस छाया कठपुतली की लोकप्रियता है।

लोकसाहित्य

गाँवों में व्याप्त ग्रामीण और जनजातियों की संस्कृति को लोकसाहित्य के नाम से पुकारा जाता है। यह एक ऐसी जीती जागती वस्तु है, जिसके द्वारा लोक की आत्मा बोलती और खेलती है। लोक संस्कृति गीतों, कथाओं, नृत्यों, कहावतों, रीति-रिवाजों, मेले, ऋतु पर्वों के रूप में प्रचलित है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है।

जो वस्तुएँ लोक की चित्त से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आन्दोलित, चालित और प्रभावित करती है, वे ही लोकसाहित्य, लोकशिल्प, लोकनाट्य, लोक कथानक, लोक गाथा आदि नाम से पुकारी जाती है। यह अत्यन्त विस्तृत है। सामान्य जन जिन शब्दों में गाते हैं, रोते हैं, हँसते हैं, खेलते हैं, उन सबको साहित्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है। जन्म से मृत्यु तक स्त्री, पुरुष, बच्चे, जवान, वृद्ध आदि की गतिविधियों का यह मौलिक अभिलेख है।

इतिहास की रहस्यमय पहेली को सुलझाने हेतु इतिहास के ग्रन्थ मूक हैं,

शिलालेख और ताम्र पत्र मलिन हैं, ऐसी तमसाछिन्न स्थिति में लोकसाहित्य ही दिशा-निर्देश करता है।

लोककथा

लोककथा लोकप्रचलित उन कथानकों को कहते हैं जो मौखिक या लिखित परम्परा से क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते हैं। जिन लोग कथाओं में पशुओं की विविध क्रियाओं के माध्यम से मानव को उपदेश दिया जाता है, उन्हें 'फेबुल' कहते हैं। 'कथासरितसागर', 'जातक', 'पंचतन्त्र', और 'हितोपदेश' अपने देश की लोककथाएँ हैं, जिनमें नैतिक शिक्षा और उपदेश प्राप्त होते हैं। किसी साधु या धर्म के नाम पर बलिदान होने वाले वीरों की जीवनकथा को 'लेजन्ड' कहते हैं। प्राचीनकाल की घटनाओं पर आधारित लोककथाओं को 'मिथ' के नाम से पुकारा जाता है। 'रामायण की कथा', 'महाभारत की कथा', 'सत्यनारायण की कथा' आदि कथाओं ने भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष को उजागर किया है।

सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ आधारभूमि लोककथाओं में ही प्राप्त होती है।

लोकगीत

लोकगीत लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित और लोक के लिए लिखे गये गीत हैं। लोकगीत सामाजिक समस्याओं को मुखर बनाते हैं। शास्त्रीय विधिविधानों से हटकर मानव जब अपने अन्दर की तरंग में लीन होकर छन्दमुक्त वाणी द्वारा सहज ही अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है, तो वही लोकगीत बनता है। सामूहिक भाव-भूमि, अकृत्रिमता, परम्परात्मकता तथा संगीतात्मकता लोकगीतों की विशेषता है। लोकगीतों की रचना व्यक्ति नहीं, समूह करता है। लोकतन्त्र की भावना को सुपुष्ट करने में लोकगीत की रचनात्मक भूमिका है। गीत रूप में होने से स्मरण एवं संप्रेषण दोनों में सरलता होती है। पारम्परिक बालगीतों में ऐतिहासिक सत्य प्रस्तुत होते हैं।

लोकनाट्य

लोकनाट्य लोकरंजन का आडम्बरहीन साधन है, जो शिष्ट मंच से अपेक्षाकृत निम्न स्तर का, परन्तु जनसमूह के हर्षोल्लसास से सम्बद्ध सामान्य जनों का मंच है। लोकनाट्यों में भारतीय आत्मा का निवास है। ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक और हास्यप्रधान लोकनाट्य द्वारा जनमानस में एक अद्‌भुत जीवनी

शक्ति का संचार होता है। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जनजागरण में 'तमाशा' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस तमाशा की शक्ति से घबराकर ब्रिटिश सरकार ने इसे प्रतिबन्धित कर दिया। यही 'तमाशा' महाराष्ट्र के परम्परागत नाट्य का एक रूप है। कथकली, भरतनाट्यम, ओडिसी, मणिपुरी, कत्थक तथा ऐसे ही अनेकों लोकनृत्य संचार के लिए उपयोग में लाए जाते हैं।

स्वांग

स्वांग ऐसा लोकनाट्य है, जिसमें नृत्य, संगीत, एवं कवित्व का संगम होता है। इसके लिए न तो किसी विशेष मंच की व्यवस्था करनी पड़ती है और न ही इसके लिए विशेष स्थान की आवश्यकता होती है। जमीन, चबूतरा, मुंडेर ही दर्शकों का आसन है। स्वांग, कहीं नकल, नौटंकी, तमाशा के रूप में जाना जाता है, तो कहीं भांड, पाथेर, जाचा, विदेशिया, भडैती के रूप में। समाज की अनेकों समस्याओं पर रोचक शैली में लोकमानस को कुरेदने का प्रयास, स्वांग द्वारा ही सम्भव है। आकाशवाणी ने स्वांगों की ओर मुड़ना आरम्भ कर दिया है। अब तो इन पर टी.वी. फिल्में भी बनाई जा रही हैं।

लोकगाथा

लोकतत्व, गेयता तथा कथातत्व का समावेश लोकगाथा में रहता है। अँग्रेजी में इसे 'बैलेड' कहते हैं। यह छोटे-छोटे पर्दों में रचित एक ऐसी स्फूर्तिदायक कविता है, जिसमें कोई लोकप्रिय कथा हो तथा जो अत्यन्त ही सजीव रीति से कही गई हो। लोकगाथा आकार में दीर्घ होते हैं। लोकगाथा में अनेक रस एक साथ पाए जाते हैं। परम्परा, विषय प्रधानता तथा व्यक्तित्वहीनता से पूर्ण लोकगाथाएँ प्राचीनता, अलौकितता तथा गेयता से परिपूर्ण हैं।

वार्तालाप

सभ्यता का श्रीगणेश वार्तालाप से ही होता है। दो प्राणियों के बीच कथोपकथन, प्रश्नोत्तर या संवाद की स्थिति ही वार्ता है। सुकरात, अरस्तू, आचार्य शंकराचार्य, दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस ने सामान्य वार्तालाप द्वारा अविस्मरणीय कार्य कर दिखाया। वार्ता से अभिप्राय उपदेश, वाद-विवाद इत्यादि से है, जो कि प्राचीन भारत में एक देवता अथवा ऋषि के द्वारा समाज को दिया जाता था। विचार परिवर्तन, चरित्र परिवर्तन और लक्ष्य परिवर्तन की दिशा में वार्तालाप अत्यन्त उपयोगी है।

वार्तालाप का लक्ष्य विचारधारा में यथासम्भव परिवर्तन लाना है। इसके

मूल में व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व, चिन्तन-मनन और दृष्टिकोण है। लोकमानस का कायाकल्प वार्तालाप द्वारा ही सम्भव है।

भाषण

जनसंचार में भाषण-कला का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषण की महान शक्ति से महान क्रान्तियों का जन्म हुआ। प्रभावकारी भाषण द्वारा जनमानस पर शासन किया जा सकता है। स्पष्टता, सरलता और प्रामाणिकता एक अच्छे भाषण की विशेषताएँ हैं। भगवान कृष्ण ने गीतोपदेश के लिए भाषण का ही सहारा लिया। शंकराचार्य, बुद्ध, महावीर, विवेकानन्द, दयानन्द, एवं गाँधीजी के भाषणों से भारत उपकृत है। ईसा, मुहम्मद साहब, अरस्तु, मार्टिन लूटर किंग आदि ने अपने भाषणों के द्वारा मानवता की सेवा की है।

आधुनिक संचार माध्यम

आधुनिक यांत्रिक विकास ने मनुष्य के विकास को सकारात्मक रूप से सभी आयामों पर प्रभावित किया है। संचार जगत भी उससे अछूता नहीं रह सका। संचार के यांत्रिक विकास प्रिटिंग प्रेस, फिल्म, आकाशवाणी, दूरदर्शन से होती हुई उपग्रह तक पहुँच गई है। इसकी विकास यात्रा का अन्त कहाँ होगा—इस सन्दर्भ में कुछ भी कहना असंभव है। पौराणिक काल से लेकर अत्याधुनिक काल तक सूचना के संचार माध्यमों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इन सबके कारण आज का यह युग सूचना प्रौद्योगिकी के युग के रूप में अभिहित हो रहा है।

प्रिण्ट मीडिया

सूचना प्रौद्योगिकी का वास्तविक आरम्भ छापाखाने के आविष्कार से हुआ। पत्र-पत्रिकाएँ अब मशीन से छपने लगीं। यह है प्रिण्ट मीडिया।

समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, किताबें इत्यादि प्रिण्ट मीडिया के अन्तर्गत आती हैं। सर्वप्रथम मुद्रण का उद्‌भव चीन में हुआ। विश्व का पहला प्रेस स्थापित करने का श्रेय इंग्लैण्ड को है।

समाचार जगत या प्रेस, संचार का मुख्य माध्यम है। प्रेस जनमत के गठन में मुख्य भूमिका निभाता है। समाचार पत्र लोगों के लिए उस आइने की भाँति है, जिसमें वे संसार को देख व जान पाते हैं और उसका महत्त्व और प्रभाव अधिक है। इसीलिए सम्भवतः मैकलुहान ने उसे 'गर्म माध्यम' का नाम दिया है।

प्रौद्योगिकी के विकास के साथ भारतीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नई-नई तकनीकों का प्रचलन हुआ। आज पत्रकारिता का उद्देश्य, सूचना देने के साथ-साथ शिक्षित करना और मनोरंजन करना भी बन गया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की तमाम चुनौतियों के बावजूद प्रिण्ट मीडिया बरकरार है।

इलैक्ट्रॉनिक माध्यम

संचार माध्यमों के विकास में इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का उदय संचार-जगत में एक क्रांतिकारी घटना थी। इलैक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों में सर्वाधिक प्रभावी माध्यम आकाशवाणी और दूरदर्शन है। यह काल दूरसंचार का आरम्भिक काल है।

आकाशवाणी

आकाशवाणी माध्यम जनसंचार का द्रुतगामी और सर्वसुलभ माध्यम है। ध्वनि तरंगों का माध्यम होने के कारण इसके लिए समय और दूरी की कोई सीमा नहीं। ये तरंगे एक ही समय में स्थान और दूरी को लांघकर विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँच जाती हैं। इसे दृश्यरहित, नेत्ररहित अथवा 'अन्धा माध्यम' कहा जाता है।

दूरदर्शन

यह जनसंचार का सर्वाधिक प्रभावशाली अपेक्षाकृत नया माध्यम है। ध्वनि के साथ चित्रों को प्रेषित करने के कारण इससे मानवीय संवेदना एवं व्यक्तित्व को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया जाता है। दूरदर्शन के आविष्कार से संचार जगत में युगान्तरकारी परिवर्तन आया है। 'टेलिविशन' शब्द में दो भाषाओं का समन्वय है। इसमें 'टेली' शब्द ग्रीक भाषा का है और 'विशन' का अर्थ है देखना। अर्थात्, टेलीविशन का हिन्दी में अर्थ हुआ—दूर से देखना अथवा दूरदर्शन।

वर्तमान समाज में दूरदर्शन ने इस कदर घुसपैठ कर ली है कि उसके बिना जिन्दगी नीरस लगने लगी है। जनसम्पर्क के लिए यह सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है। दूरदर्शन पर प्रतिदिन अनेकों राष्ट्रीय और मेट्रो कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जिनमें फिल्म, धारावाहिक, नाटक, नृत्य तथा व्यावसायिक कार्यक्रम शामिल हैं।

चलचित्र माध्यम

चलचित्र माध्यम अथवा सिनेमा जनसंचार का एक और अत्यन्त प्रभावशाली

माध्यम है। विश्व के जनमानस को सर्वाधिक प्रभावित करने की दृष्टि से चलचित्रों को अन्य संसार माध्यमों की अपेक्षा अधिक महत्व मिला है।

चलचित्र, मानव की गहन अनुभूतियों और संवेदनाओं को प्रकट करने वाला एक अत्याधुनिक माध्यम है, जिसमें लेखन, दृश्य, कल्पना, मंच निर्देशन, रूप-सज्जा के साथ प्रकाश विज्ञान, इलेक्ट्रानिक्स, कार्बनिक और भौतिक रसायनविज्ञान के तकनीकी योगदान हैं। यह सृजनात्मक और यान्त्रिक प्रतिभा का सुन्दर संगम है।

चलचित्र में विज्ञान की शक्ति और कला का सौन्दर्य है, जो मस्तिष्क को खाद्य देती है और हृदय को आन्दोलित करती है। ध्वनि और रंग दोनों के समन्वय से दर्शकों में वास्तविकता का बोध होता है। तीव्र और मन्द–सभी वर्गों के श्रोता और दर्शकों के लिए चलचित्र उपयोगी है।

दूरसंचार

दूरसंचार अँग्रेजी के 'टेलीकम्यूनिकेशन' का हिन्दी पर्याय है। इसका अभिप्राय है–दूर स्थानों तक सन्देशों का आदान-प्रदान। दूरसंचार के क्षेत्र में हुई प्रगति और अतिआधुनिक संवेदनशील उपकरणों के विकास का ही यह चमत्कार है कि हम पलक झपकते ही विश्व के किसी कोने से अपना सम्पर्क स्थापित कर लेते हैं।

दूरसंचार साधनों की विकास यात्रा, कबूतर से चलकर टेलीग्राफ, टेलीप्रिन्टर, टेलक्स, फैक्स से आगे चलकर कम्प्यूटर और उपग्रह तक पहुँच चुकी है।

नवइलेक्ट्रॉनिक माध्यम

कम्प्यूटर और इन्टरनेट

सम्प्रति सर्वत्र कम्प्यूटरों का वर्चस्व है।

आदमी के दिमाग का सर्वाधिक सुसंगठित प्रतिरूप अगर आदमी द्वारा निर्मित कोई चीज है, तो वह 'कम्प्यूटर' है। दूरसंचार व्यवस्था को अधिकाधिक सफल बनाने में 'कम्प्यूटर' का विशेष हाथ है। पत्रकारिता जगत में अभूतपूर्व क्रान्ति लाने में इसकी अहम् भूमिका है।

इन्टरनेट एक ग्लोबल सूचना नेटवर्क है, जोकि पूरी दुनिया को अपने आप में समेटे हुए है। इसकी संरचना, विकास एवं स्थापना 1990 में संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विकास अकादमी द्वारा की गई। यह बिखरती दुनिया को जोड़ने की एक अत्याधुनिक विकसित संचार प्रणाली है। इन्टरनेट के माध्यम

से व्यापारी, उद्योगपति, शिक्षक, चिकित्सक, विश्व के प्रमुख व्यक्तियों अथवा संस्थानों से सम्पर्क कर विचार विमर्श कर सकते हैं। जिस सूचना महामार्ग की आज दुनिया में होड़ मची है, वह इन्टरनेट की असीमित सम्भावनाओं से ही उपजा हुआ है।

अन्तरिक्ष माध्यम

भारत में अन्तरिक्ष संचार प्रणाली का शुभारम्भ सन् 1962 में अन्तरिक्ष अनुसन्धान समिति के गठन के साथ ही हो गया। सन् 1965 में उपग्रह संचार में, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, इन्टरनेट के माध्यम से व्यवहार में लाया गया, जिसका उद्देश्य सदस्य राष्ट्रों को संचार उपग्रह की सुविधा प्रदान करना था। यदि कोई महत्त्वपूर्ण घटना विश्व के किसी कोने में घटती है, तो अगले क्षण ही उसकी जानकारी अन्तरिक्ष संचार माध्यम यानि उपग्रहों के कारण सम्भव हो सकती है। यह यान्त्रिक क्रान्ति कभी हमें चौंकाती है, कभी चिन्तित करती है, पर अन्ततः आश्वस्त करती है।

कालचक्र

'इन्साइट' और 'न्यूज ट्रैक' जैसी वीडियो पत्रिकाओं के क्रम में 'कालचक्र' का प्रादुर्भाव हो चुका है जो खास खबरों की मासिक वीडियो कैसेट है। इसकी सहायता से समाचार पढ़े नहीं, देखे जा सकते हैं। प्रसिद्ध पत्रकारों द्वारा तैयार 'कालचक्र' विश्व की घटनाओं, स्वास्थ्य, संस्कृति, उद्योग-व्यापार एवं महिला जगत से सम्बद्ध है। कम्प्यूटरों, फोटोटाइप सेटिंग उपकरणों और उपग्रह प्रेषण सुविधा से सम्पन्न पत्रकारिता जगत हेतु, वीडियो पत्रकारिता, चुनौती के रूप में उभर रही है।

जनसंचार माध्यम लोगों का मनोरंजन करने के साथ ही साथ, जन व्यवहार को भी नियन्त्रित एवं निर्देशित करते हैं। इससे ज्ञान की वृद्धि होती है; राजनीतिक समाचार/संसदीय समाचार भी जनसंचार माध्यमों द्वारा संचालित किए जाते हैं।

संचार और समाजीकरण

जिस प्रकार मानव जीवन के लिए वायु को प्राणतत्त्व माना गया है, ठीक उसी प्रकार समाज का प्राणतत्त्व संचार है। संचार और संचार माध्यमों का प्रथम और अन्तिम लक्ष्य मनुष्य जीवन की बेहतरी है। स्पष्ट है कि इनके केन्द्र में मनुष्य मात्र है।

आज संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व सूचना-क्रान्ति घटित हुई है। इस सूचना

क्रान्ति ने, विशेष रूप से 'मीडिया' ने समाज का चेहरा ही बदल दिया है। आधुनिक जन-जीवन और सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था का ताना-बाना संचार माध्यमों द्वारा सुव्यवस्थित है। संचार, समाजीकरण का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। मानव सामाजिक प्राणी तब बनता है, जब वह मौखिक, परम्परागत, मुद्रित या इलैक्ट्रानिक संचार साधनों द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहारों को सीखता है और उन्हें अपना लेता है। पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी, दूरदर्शन और इन्टरनेट के सहारे मानव का समाज विस्तृत होता है और वह पूरे विश्व की क्रियाओं में सहभागी होता है। संचार के अभाव में व्यक्ति का विश्व उसी तक सीमित होगा। यह व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करता एवं प्रभावित करता है। उपग्रह, कम्प्यूटर और इलेक्ट्रानिक्स के कारण संवादों का द्रुत गति से विस्तार हो रहा है, जिससे मानव दिनानुदिन अधिक चैतन्य हो रहा है। पहले भुजा की शक्ति थी : फिर भाषा की शक्ति थी, तत्पश्चात् तेल की शक्ति और आज तो आणविक उपग्रह की शक्ति है। आज गति और विस्तार एकाकार हो चुके हैं। संचार साधनों में अप्रत्याशित परिवर्तन दृष्टिगत हो रहे हैं। संचार के साधन मनोरंजन और विकास के सन्देश देकर समाज का नवनिर्माण करते हैं। संचार साधनों का बाहुल्य समाजीकरण की गति को तीव्र करता है। एक शब्द में कहें तो, संचार ही सामाजिक विकास का सूत्रधार है और सामाजिक नियन्त्रण का साधन भी है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आधुनिक जनजीवन और सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था का ताना-बाना, संचार माध्यमों द्वारा सुव्यवस्थित है।